SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पवन करण के काव्य में स्त्री जीवन : एक अध्ययन

गोरेलाल बिसोरिया, शोधार्थी,
हिन्दी साहित्य, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :

गोरेलाल बिसोरिया, शोधार्थी,
हिन्दी साहित्य, जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/10/2019
Revised on : -----
Accepted on : 22/10/2019
Plagiarism : 01% on 17/10/2019

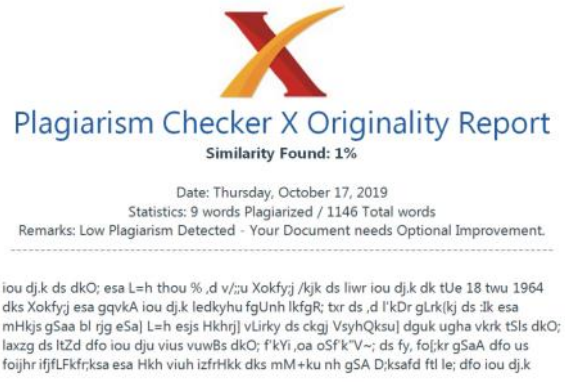
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Thursday, October 17, 2019
Statistics: 9 words Plagiarized / 1146 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

iou dj.k ds dkO; esa L=h thou % ,d v/;;u Xokfy;j /kjk ds liwr iou dj.k dk tUe 18 twu 1964 dks Xokfy;j esa gqvkA iou dj.k ledkyhu fgUnh lkfgR; txr ds ,d l'kDr gLrk{kj ds :Ik esa mHkjs gSaa bl rjg eSa] L=h esjs Hkhrj] vLirky ds ckgj VsyhQksu] dguk ugha vkrk tSls dkO; laxzg ds ltZd dfo iou dju vius vuwBs dkO; f'kYi ,oa oSf'k"V~; ds fy, fo[;kr gSaA dfo us foijhr ifjfLFkfr;ksa esa Hkh viuh izfrHkk dks mM+ku nh gSA D;ksafd ftl le; dfo iou dj.k

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत शोध पत्र **''पवन करण के काव्य में स्त्री जीवन : एक अध्ययन''** के रूप में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। ग्वालियर (म.प्र.) के पवन करण समकालीन हिन्दी साहित्य जगत के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में उभरे हैं। पवन करण जी की लेखनी समाज की कुरीतियों, स्त्रियों की दुर्दशा, रूढ़िवादियों की पौंगापंथी पर जबरदस्त प्रहार करती हैं साथ ही सामाजिक विषमताओं को दूर करने की आंकाक्षा रखती है। पवन करण जी की कविताओं में व्यक्त सामाजिक परिवर्तन नारी के यथार्थ व विसंगतियों को दर्शाती हैं। पवन करण ने अपने काव्य में स्त्री जीवन के हर अनछुए पहलू को अपनी लेखनी से छुआ है एवं जनमानस को सोचने पर मजबूर किया है। साहित्यिक परिदृश्य में पवन करण की रचनाएं बदले हुए परिदृश्य से साक्षात्कार करते हुए साहित्य अध्येताओं के लिए नवीन आयाम खोलती हैं।

मुख्य शब्द :– स्त्री जीवन ।

ग्वालियर धरा के सपूत पवन करण का जन्म 18 जून 1964 को ग्वालियर में हुआ। पवन करण समकालीन हिन्दी साहित्य जगत के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में उभरे हैं इस तरह मैं, स्त्री मेरे भीतर, अस्पताल के बाहर टेलीफोन, कहना नहीं आता जैसे काव्य संग्रह के सर्जक कवि पवन करन अपने अनूठे काव्य शिल्प एवं वैशिष्ट्य के लिए विख्यात हैं। कवि ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी प्रतिभा को उड़ान दी है। क्योंकि जिस समय कवि पवन करण जी ने लिखना आरंभ किया था

उस समय इन्हें अनेक कठिनाईयों से जूझना पड़ा क्योंकि आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि में कोई इतना पढ़ा–लिखा न था जो इन्हें मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दे पाता। आपके पिता अशिक्षित थे और आर्थिक व सामाजिक रूप से वे पिछड़ी जाति से आते थे। इन परिस्थितियों में इन्होंने साहित्य यात्रा आरंभ की लेकिन प्रतिभा के अंकुर इनकी वाल्यावस्था में ही अंकुरित हो चुके थे। अनुकूल परिस्थिति न होते हुए भी इन्होंने अपना लेखन कार्य जारी रखा और हिन्दी साहित्य जगत में बड़ी तेजी से अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में कामयाब रहे। पवन करण जी की कविता एक स्थानीय समाचार पत्र में प्रकाशित हुई फिर कविता लिखने का उनमें जुनून पैदा हो गया। फिर अनवरत चलने वाली साहित्यिक यात्रा में कवि ने सामाजिक परिवर्तन के हर कोण को संवेदना की गहराई से आत्मसात किया और साहित्य पटल पर अंकित किया वह भी नये वेतन एवं नए अंदाज के साथ।

पवन करण जी की उपलब्धियों की यदि बात की जाए तो वर्श 2000 में म0प्र0 साहित्य परिषद के सहयोग से पहला कविता संग्रह 'इस तरह मैं' प्रकाशित, वर्ष 2004 में दूसरा कविता संग्रह 'स्त्री मेरे भीतर' प्रकाशित, कविता संग्रह 'इस तरह मैं' पर वर्ष 2000 में म०प्र० साहित्य अकादमी का 'रामविलास शर्मा' पुरस्कार, वर्ष 2002 में म०प्र० कला परिषद का प्रतिष्ठित 'रजा पुरस्कार', कविता संग्रह 'स्त्री मेरे भीतर' पर वर्ष 2004 में मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वागीश्वरी सम्मान, वर्ष 2006 में मास्को (रूस) का पूश्किन सम्मान, वर्ष 2007 का राग विराग कला केन्द्र नई दिल्ली का शीला सिद्धान्तकर स्मृति सम्मान (2007), परंपरा ऋतुराज सम्मान (2009) आपको प्राप्त हुआ।

म०प्र० के प्रमुख समाचार पत्र 'नवभारत' में प्रति गुरुवार प्रकाशित होने वाले साहित्यिक पृष्ठ 'सज्जन' का पाँच बरसों तक सम्पादन, साहित्य केन्द्रित साप्ताहिक स्तंभ शब्द–प्रसंग का नियमित लेखन में आप संलग्न हैं।

'स्त्री मेरे भीतर' में रची गई रचनाओं में उसकी जिद–1,2,3,4,5,6, बीजने, एलबम, बुरका, गुल्लक, उसके दिन, यह आवाज मुझे सच्ची नहीं लगती, उसका दुःख, किस तरह मिलूँ तुम्हें, उस अहसास के बारे में, बूढ़ी बेरिया, जिसे तुम मेरा पिता कहती हो, एक खूबसूरत बेटी का पिता, मौसेरी बहनें, साँझी, बहन का प्रेमी : पाँच कविताएँ, मैं उससे अब भी प्रेम नहीं करता, पुरुष के बिना रह भी सकती हो तुम, ये भी कोई भूलनेवाला दिन है, हम पति अनाकर्शक पत्नियों के, टायपिस्ट, आपत्तियों के बीच प्रेम, तुम जैसी चाहते हो वैसी नहीं हूँ मैं, सुननी भी पड़ती है उसकी, उसे कहना ही पड़े तो, मगर यह तो बताओ, स्तन, संख्या, अबोला, स्पर्श जो किसी और को सौंपना चाहती थी वह, एक स्त्री मेरे भीतर, दरअसल उसे समझना खुद को समझना है, प्यार में डूबी हुई माँ, इस जबरन लिख दिए गए को ही, स्त्री –सुबोधिनी, तुम जिसे प्रेम कर रही हो इन दिनों आदि रचनाओं में स्त्री के यथार्थ का चित्रण किया है।

पवन करण जी के लेखनी से अग्निस्फलिंग की भांति समाज की कुरीतियों स्त्रियों की दुर्दशा, रूढ़िवादियों की पौंगापंथी पर जबरदस्त प्रहार हुआ। 'स्त्री मेरे भीतर' की 'बुरका' कृति में पुरुषों के लिए कहा है–

तुम बार–बार कहते हो
और मुझे जरा भी
यकीन नहीं होता
इसे मेरे लिए
खुद खुदा ने बनाया है
तुम्हारे हुक्म पर जब भी
पहनती हूँ इसे
कतई स्वीकार नहीं करती
मेरी नुची हुई देह
स्वीकार नहीं करती
हर बार चीख–चीखकर
कहती है
नहीं, इसे खुदा ने नहीं
तुमने बनाया है
मेरा खुदा कहलाने के लोभ में
मुझे इसे तुमने पहनाया है

नारी जीवन से संबंधित कविता लक्षणा तथा व्यंजना का प्रयोग अवश्य है और वह सरस व बोधगम्य है। छन्दहीन मुक्तक काव्य, गद्यकाव्य के सर्जन पवन करण जी की लेखनी समाज को नई दिशा प्रदान करने का संकेतक सिद्ध हुई है।

पवन करण जी की कविता सामाजिक विषमताओं को दूर करने की आंकाक्षा रखती है। पवन करण जी की कविताओं में व्यक्त जो सामाजिक परिवर्तन नारी के यथार्थ व विसंगतियों को दर्शाती है।

कवि ने स्त्री को बूढ़ी बेरिया की उपमा देकर अपने काव्य का सृजन कुछ इस प्रकार से किया है–

टोकती नहीं
स्कूल जाते समय बच्चों को
लौटते वक्त उन्हें
पास बुलाती है
बूढ़ी बेरिया
उनसे करती है
बेरों की भाषा में
खट्टी–मीठी बातें
उनके प्रेम में जीवन–भर
अभिभूत
माँ–सी बेरिया
रख ही नहीं पाती याद
बच्चों ने उस पर
कब कितने
पत्थर उछाले

कवि ने प्रत्येक स्त्री के विभिन्न रूपों का अपने काव्य में चित्रण किया है। 'एलबम' कृति में एक बूढ़ी औरत के दिल की व्यथा को कुछ इस प्रकार से उजागर किया है–

एक अकेली विरान औरत के पास
जिसे हम बूढ़ी माँ कहकर बुलाते हैं
एक अलबम है
उसके घर की तरह पुरानी, मैली
और लगातार फटती जा रही है एलबम
जिसे वह यूँ ही किसी को नहीं दिखाती
रखती है सन्दूक में सँभालकर
मगर जब भी एलबम खुलती है
वह निर्जन औरत खुलती है
खुलता है उसका भयावह सूनापन
उस औरत का दिल सीने में नहीं
सन्दूक में बन्द एलबम में धड़कता है

कवि ने स्त्री के दुख को इस तरह उकेरा है :–

वह उदास है आज
आज देर तक देखेगी
वह खुद को आइने में
देखेगी अपनी चमड़ी पर
फेर–फेर कर हाथ,
उँगलियों पर गिनेगी उम्र,
चौकेगी हर आहट पर
उसका दुःख आज
खूब सताएगा उसे

निष्कर्ष :–

स्पष्ट है कि वर्तमान समय में पवन करण ने नारी की विसंगतियों, उसकी दुर्दशा एवं उसके अन्तर्मन की पीड़ा को अपने काव्य में उजागर किया है। पवन करण की रचनाएं नारी मनोविज्ञान का सूक्ष्म अंकन करते हुए नारी यथार्थ के नवीन संदर्भ को उद्घाटित करती हैं स्त्री की दशायें व दिशाओं में संभावनाओं को तलाशते हुए एक नवीन चित्र का सृजन करती हैं। साहित्यिक परिदृश्य में पवन करण की रचनाएं बदले हुए परिदृश्य से साक्षात्कार करते हुए साहित्य अध्येताओं के लिए नवीन आयाम खोलती हैं। आने वाले समय में पवनकरण का साहित्य और भी सृजित होगा जिससे आने वाली पीढ़ी प्रेरणा ग्रहण कर साहित्य को एक बार फिर हाशिये से खींच कर बीच में लाकर उसकी उपयोगिता सिद्ध करेगी।

साहित्य को अपने समय के अलग–अलग चश्मों से देखा जाता है, देखा भी जाना चाहिए। 'टेक्स्ट' के इन तमाम 'रीडिंग्स' में साहित्य में अंतर्निहित विचारों की विवेचनाएँ होती हैं, पर उनका जो मुकम्मल प्रभाव है अगर वह असरदार हैं तो वे बची रहती हैं। फिर–फिर पढ़ी जाती हैं। कुछ समय पूर्व पवन करण की 'स्तन' कविता पर घनघोर चर्चा हुई थी। इस कविता को लोलुप पुरुष मानसिकता से ग्रस्त, स्त्री विरोधी आदि आदि कहा गया। कवि ने फिर से इन कविताओं को टटोलने की कोशिश की है। एक अच्छी बात यह है कि वह भारतीय सौन्दर्यबोध को भी लगातार ध्यान में रखे हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. *पवन करण (2006), प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 104, ISBN 81–267–1140–X*
2. *अनुभव की प्रयोगशाला में आवाजाही का कवि : पवन करण –महेश कटारे, www.anunad.com. Retrieved 2016-12-19.*
3. *hindisamay.com*
4. *http://shodhganga.inflibnet.ac.in*

****